One of the best from the file of Gopal Raju

वास्तु, फैंगशुई तथा सकारात्मक ऊर्जा

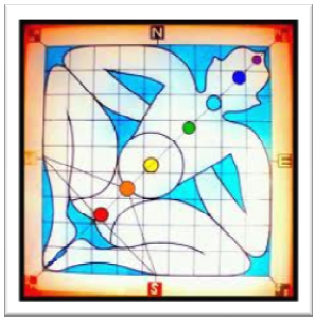

समस्त धर्मों हिन्दू, बौद्ध, ताओ, कन्फ्यूशियस, शिंटो, जुरथ्रस्थ (पारसी), इस्लाम, यहूदी तथा ईसाई के अनुयायी एक ऐसी शक्ति में विश्वास करते हैं जो कम से कम मनुष्य से अधिक शक्तिशाली है। इस शक्ति को विज्ञान तीन ऊर्जाओं के रुप में स्वीकारता है - न्यूक्लियर, फोर्स, मैग्निटिक फोर्स तथा कॉस्मिक फोर्स। इनके परे कुछ भी नहीं है, सब कुछ इसी सत्य-सत्ता में समाहित है। इनमें व्यक्ति, देश, काल आदि के अनुसार असन्तुलन बना नहीं कि समझिए आपदाओं-विपदाओं तथा अराजकता ने घेरना प्रारम्भ कर दिया। चिरन्तर से प्रत्येक देश-धर्म का सतत् प्रयास रहा है कि विरोधी बन गयी इन ऊर्जाओं को पुनः कैसे अनुकूल करके सन्तुलन बनाया जाए।

सृजनात्मक शक्तियों में मुक्त प्रवाह को अनुकूल करके अधिकाधिक दैहिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए वास्तुशास्त्र तथा फेंगशुई के प्रयोग भी अत्यधिक प्रचलित और प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं।

Gopal Raju

वास्तु विज्ञान के नियम और सिद्धान्त पूर्णतया व्यवहारिक तथा वैज्ञानिक हैं। पृथ्वी का प्राकृतिक चुम्बकीय क्षेत्र, जिसमें कि चुम्बकीय आकर्षण सदैव उत्तर से दक्षिण दिशा में रहता है, हमारे जीवन को निरन्तर प्रभावित करता है। पल-प्रतिपल जीवन इस चम्बकीय आकर्षण के प्रति आकर्षित है। प्राकृतिक रुप से इस अदृश्य शक्ति द्वारा हमारा जीवन संचार हो रहा है। एक छोटा सा उदाहरण देखें, इस आकर्षण की उपयोगिता स्वयं सिद्ध हो जाएगी - नियम है कि सोते समय हम अपने पैर दक्षिण दिशा की ओर नहीं करते। सौर जगत ध्रुव के आकर्षण पर आलम्बित है। यह ध्रुव उत्तर दिशा में स्थित है। यदि कोई व्यक्ति दक्षिण दिशा की ओर पैर और उत्तर की ओर सिर करके सोएगा तो ध्रुव चुम्बकीय प्रभाव के कारण पेट में पड़ा भोजन पचने पर जिसका अनुपयोगी अर्थात् न पचने वला अंश मल के रुप में नीचे जाना आवश्यक है, वह ऊपर की ओर आकर्षित होगा। इससे हृदय, मस्तिष्क आदि पर विरीत प्रभाव पड़ेगा। इसके विपरीत उत्तर दिशा की ओर पैर होंगे तो एक तो हेमारा भोजन परिपाक ठीक होगा दूसरे वहॉ ध्रुवाकर्षण के कारण दक्षिण से उत्तर दिशा की ओर प्रगतिशील विद्युत प्रवाह हमारे मस्तिष्क से प्रवेश करके पैर के रास्ते निकल जाएगा और प्रातः उठने पर मस्तिष्क विशुद्ध परमाणुओं से परिमाणुओं से परिपूर्ण एवं सर्वथा स्वस्थ होगा।

वास्तु शास्त्र में जीवन को प्रभावित करने वाले ऐसे अनेक तथ्य हैं परन्तु भौतिकवाद की अन्धड़ दौड़ में उनका उपयोग पा लेना लुप्तप्राय हो गया अथवा विषय के प्रति अज्ञानतावश उसका पूरा-पूरा लाभ नहीं मिल पा रहा। हमारी सृष्टि पंच भूतात्मक है अर्थात् इसमें पंच तत्वों का समावेश है। शरीर भी इन्हीं पांच तत्वों का सम्मिश्रण है। अध्यात्मावाद में घुसकर अण्ड-पिण्ड सिद्धान्त को समझकर ही तथ्य को समझा जा सकता है। प्रत्येक निर्माण कार्य में भी यही पंच तत्व कारक हैं इनमें सामंजस्य

Gopal Raju

बनाना ही वास्तुशास्त्र अथवा फेंगशुई सिखाता है। जब भी इन पंच तत्वों में तथा इन ऊर्जाओं में प्रकृति से विपरीत प्रभाव बनने लगता है तो उसके दुष्परिणाम हमें भोगने ही पड़ते हैं। डेविडसन की पुस्तक 'दि ग्रेट पिरामिड' का अध्ययन-मनन करें तो पता चलेगा कि पूर्व मिश्रवासियों को ऐसे प्राकृतिक ऊर्जा स्रोतों को ज्ञात करने का ज्ञान प्राप्त था जो मानव जीवन के लिए सर्वाधिक सुःखद था। अनेक प्राचीन मंदिर, ऐतिहासिक भवन तथा पिरामिड आदि वास्तु शास्त्र के सजीव उदाहरण हैं। इन सबमें प्रयुक्त कोण, बिन्दु, आयत, वर्ग आदि ज्यामितीय आकृतियों में इन सकारात्मक ऊर्जाओं का विलक्षण विज्ञान छिपा है। यह विज्ञान यहॉ तक विकसित था कि पिरामिड की एक कक्ष की उर्ध्वाधर विभाजन रेखाओं अथवा अनुप्रस्थ दीवारों की रेखाओं को नीचे आकर एक-दूसरे स्थान को काटें तो इन काट-कूटों के बीच के स्थानों का मापन पिरामिड इंचों में करके उस वर्ष, माह, दिन में यदि जोड़ा जाए तो महत्वपूर्ण तिथियों की भविष्यवाणी तक की जा सकती थी। पिरामिड द्वारा जिन भविष्यवाणियों का संकेत मिला है वह है पृथ्वी का जन्मकाल, बाढ़, मानव का भौतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान और पतन, महान सम्राटों के अनेक नैतिक और राजनैतिक युद्ध-महायुद्ध आदि। ये पुरानिर्माण कितनी सटीक वैज्ञानिक गणनाओं पर आधारित थे इसका अनुमान उनके ज्यामितीय अध्ययनों से सहज लग जाता है। गीजा के ग्रेट पिरामिड का अध्ययन करने से वैज्ञानिकों के सामने और भी चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। उसके आधार का क्षेत्रफल निकालकर ऊॅचाई के बारह गुना संख्या से भाग देने पर जो योगफल प्राप्त होता है वह गणितीय स्थिरांक 'पाई' के मान (3.143) के बराबर था। इसी प्रकार उसकी ऊॅचाई को लाख गुना करने पर पृथ्वी से सूर्य की दूरी 9 करोड़ 30 लाख मील प्राप्त होती है। सूर्य की ऊर्जा कुल दूरी के लाखवें हिस्से में सबसे अधिक संकेदिन्द्रत होती है। पिरामिड के मध्य का उत्तर-दक्षिण अक्ष संपूर्ण पृथ्वी को ठीक दो भागों में बॉटता है, साथ ही पृथ्वी क ेजल और - स्थल

को ठीक आधा कर देता है। इससे स्पष्ट है कि पृथ्वी के गोलाकार होने का पूर्व में ज्ञान था। पिरामिड गुरुत्वाकर्षण केन्द्र के ठीक ऊपर स्थित है। इसका पादाधार 635600 मीटर है जो पृथ्वी के अर्द्धव्यास का ठीक दसवॉ भाग है। आधुनिक मीटर इसका चालीसवॉ हिस्सा है। वर्ष में 365 दिन होते है, इसका सौ गुना कर उसमें एक दिन के 24 घंटे जोड़ने पर योग 36524 होता है यह मीटर में पिरामिड के आधार की परिधि है। इसके दरवाजे सर्वत्र पूर्वाभिमुखी हैं। उत्तरायण गति के अंत में सूर्य जिस बिन्दू तक पहुॅचता है और वापस लौटता है उसको 'वसंत संवात' कहते हैं। सूर्य 21 जून से इस संपात बिन्दू पर पहुॅचता है। प्रत्येक दरवाजे का इसी बिन्दु की ओर होना निश्चय ही किसी विशिष्ठ उददेश्य की ओर इंगित करता है। यह सब अकारण नहीं हो सकता।

वैज्ञानिक यह भी मानने लगे हैं कि वास्तु के अद्भुत यह निर्माण कम से कम शवगाह नहीं हो सकते यह अवश्य ही किसी अतिविकसित सभ्यता के उपासना ग्रह रहे होंगे। दूसरे यह भी मत है कि असाधारण ब्रह्माण्डीय ऊर्जा वाले तथा दिव्य रुपान्तर क्षमता वाले यह निर्माण अति विकसित वेधशाला रही हों। जो भी रहा हो यह अवश्य सिद्ध होता है कि निर्माण यदि वास्तु के नियमों को ध्यान में रखकर किया गया है तो वह हर दृष्टि से सुखदायी होगा। परन्तु फैराहो अथवा पूर्व-पूर्वान्तर से चले आ रहे इस विलक्षण शास्त्र का प्रयोग कालान्तर में सिवाय राज प्रसाद, मन्दिर, एतिहासिक भवन, स्मारकों आदि को छोड़कर नगण्य होता गया, इसका मुख्य कारण था शहरीकरण अथवा भौतिक दौड़ की आपाधापी जिसके कारण दैहिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक सुखों में निरन्तर कमी आती चली गयी। सत्तर-अस्सी के दशक में हमें शास्त्र के प्रति पुनः जागृति प्रारम्भ हुई। परन्तु दुर्भाग्य यहॉ रहा कि यह शास्त्र पुनः कुछेक ऐसे हाथों में चला गया जिनको या तो राजनीतिक संरक्षण प्राप्त था या जिनके साथ मीडिया था। जिस कारण उनके द्वारा इसका दोहन ही हुआ और जन साधारण इसके सुःप्रभाव से अछूता रहा। हम

Gopal Pal

कुछेक लोग इस दिशा में सतत् प्रयत्नशील है कि यह किसी की बपौति न बने इसीलिए यह लिख रहा हूँ कि 'सर्वे भवन्तु सुःखिनः .....।'

इन सब विपरीत ऊर्जाओं को अनुकूल करने में फेंगशुई बहुत सहायक सिद्ध हुई है। इस छोटे से लेख में मेरा यही प्रयास है कि जन साधारण इस गुप्तादिगुप्त विद्या को समझे, मनन करे और व्यवहार में लाए। यदि निर्माण वास्तु शास्त्र के अनुकूल नहीं हुआ है तो भी इसको अनुकूल किया जा सकता है और इसमें फेंगशुई सबसे सरल उपक्रम है। इस विज्ञान का सिद्धांत अध्यात्मविद्या में वर्णित 'नाद' और 'बिन्दु' का ही आधार है। विज्ञान भी यही मानता है कि प्रकृति के अन्तराल में एक ध्वनि प्रतिक्षण उठती है, जिसकी प्रेरणा से आधातों द्वारा परमाणुओं में गति उत्पन्न होती है और सृष्टि का समस्त क्रिया-कलाप सन्तुलित व्यवस्था में चलता रहता है।

फैंगशुई में सब कुछ 'ची' अर्थात् सकारात्मक ऊर्जा पर आधारित है। 'ची' को अनुकूल करने के लिए घर में नौ घंटियों वाला विंउ चाइम बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। घर की बलाएं दूर करने के लिए ड्रैंगन का चित्र अनुकूल 'ची' देता है। उत्तर दिशा में फिश एक्वेरियम तथा दक्षिण दिशा में में गरुड़ का चित्र रखना स्वास्थ्य वर्धक सिद्ध होता है। सुख-समृद्धि के लिए हॅसता हुआ चीनी तोंदियल बुद्धा, हाथ उठाए चीनी साधु बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं।

भारतीय-पाश्चात्य ज्योतिष में प्रचलित 12 राशियों की भांति चीन में फैंगशुई में भी 12 राशियॉ प्रचलित हैं। इनसे सम्बधित पैन्डेट, चित्र तथा अन्य सामग्रीयॉ मिलती हैं। अपनी राशि के अनुसार यदि यह घर में प्रयोग किए जाएं तो सकारात्मक ची घर में उत्पन्न किया जा सकता है। नीचे राशि तथा उनके वर्ष दे रहा हूँ। पाठक जन्म के वर्ष देखकर अपनी चीनी राशि जानें और लाभ उठाएं। विंड चाइम की तरह यह राशि चिन्ह भी हवा से हिलते रहना चाहिए।

क्रं.	राशि	जन्म वर्ष (ई. सन)
1.	चूहा	1900, 1912, 1024, 1936, 1948, 1960, 1972, 1984, 1996, 2008
2.	भैंसा	1901, 1913, 1925, 1937, 1949, 1961, 1973, 1985, 1997, 2009
3.	शेर	1902, 1914, 1926, 1938, 1950, 1962, 1974, 1986, 1998, 2110
4.	बिल्ली	1903, 1915, 1927, 1939, 1951, 1963, 1975, 1987, 1999, 2111
5.	उड़ता अजगर	1904, 1916, 1928, 1940, 1952, 1964, 1976, 1988, 2000, 2112
6.	सर्प चिन्ह	1905, 1917, 1929, 1941, 1953, 1965, 1977, 1989, 2001, 2113
7.	घोड़ा	1906, 1918, 1930, 1942, 1954, 1966, 1978, 1990, 2002, 2114
8.	बकरी	1907, 1919, 1931, 1943, 1955, 1967, 1979, 1991, 2003, 2115
9.	बन्दर	1908, 1920, 1932, 1944, 1956, 1968, 1980, 1992, 2004, 2116
10.	मुर्गा	1909, 1921, 1933, 1945, 1957, 1969, 1981, 1993, 2005, 2117
11.	कुत्ता	1910, 1922, 1934, 1946, 1958, 1970, 1982, 1994, 2006, 2118
12.	सुअर	1911, 1923, 1935, 1947, 1959, 1971, 1983, 1995, 2007, 2119

वास्तु शास्त्र में भवन का सबसे बड़ा दोष तब माना जाता है जब उसके उत्तर, पूरब अथवा उत्तर-पूरब अर्थात् ईशान कोण में में शौचालय स्थित हो। ऐसी स्थिति में शौचालय के दक्षिण-पश्चिम कोण में एक ऐसा कार्बन आर्क लैंप, जिसका प्रकाश उसके उत्तर-पूर्वी कोण पर पड़े, लगा दें इससे यह दोष दूर हो जाएगा।

फैंगशुई के अनुसार भवन में विभिन्न स्थानों पर व्यवस्थित ढंग से दर्पण भी अनुकूल प्रभाव देते हैं। दर्पण ऊर्जा विकरण का कार्य करते हैं। निम्न पांच परिस्थितियों में दर्पण का प्रयोग उपयोगी सिद्ध होता है।

1. यदि कमरे की दक्षिण दीवार उत्तर से बड़ी हो।

2. ईशान में जल अथवा पूजा की व्यवस्था न हो पाई हो।

3. पश्चिमी दीवार पूरब से बड़ी हो।

4. उत्तरी-पूर्वी कोण से दक्षिण-पश्चिम कोण छोटा हो।

5. ईशान में शौचालय हो।

फैंगशुई में भी पंचभूतात्मक तत्व का समावेश माना गया है। इन तत्वों के परे कुछ नहीं मानते। इन आकार-आकृतियों का प्रयोग भी सकारात्मक ची के लिए प्रचलन में है। पाठक अपने तत्व के अनुसार लाभ उठाएं।

शुई में पंच तत्व	आग	धातु	पानी	लकड़ी	पृथ्वी
आकार	गोल त्रिभुजाकार	गोल	लहरदार	आयताकार अथवा तिरछा	गेल नारंगीकार
संम्बन्धित वस्तुएं	मोमबत्ती फैंगशुई दीपक धूप-दीप अगरबत्ती	विंड चाइम	फौव्वारा	हरे-भरे फूल-पौधे	बौध संतों की प्रतिमाएं

फैंगशुई दीपक का उपयोग वास्तु दोषों को दूर करने में मैंने बहुत उपयोगी पाया है। अपनी प्रचलित नाम राशि की दिशा अथवा उससे सम्बन्धित ग्रह की दिशा में यह दीपक अपने सोने के स्थान पर सांयकाल से 2/3 घंटे जलाएं। स्वास्थ्य लाभ के लिए यह बहुत अच्छा उपक्रम सिद्ध होता है। एक खुले मुँह वाले कॉच के पारदर्शी बर्तन में कुछ बच्चों के खेलने वाली रंगीन गोलियॉ डाल दें। इसमें जल भरें तथा सतह पर एक सफेद फ्लोटिंग

मोमबत्ती जला दें। तैरने वाली मोम बत्ती न मिले तो किसी तैरने वाली पारदर्शी सतह पर सफेद मोमबत्ती जला दें। नित्य इस दीपक का पानी बदल दिया करें। प्रयास करें यदि बाजार से फेंगसुई दीपक मिल जाए तो अधिक अच्छा होगा।

ध्यान केन्द्रित करने के लिए बौद्ध मठों में सुगन्धित मोमबत्तियों मिलती हैं। इनकी भीनी-भीनी सुगन्ध में अपने चित्त का तारत्म्य वाह्य मण्डल से जोड़कर अपने विवेक और प्रज्ञा ज्ञान से 'ची' को सकारात्मक करने का प्रयास करें - आनन्द की अनुभूति होगी।

Gopal Raju